



अमीर मुआविया رضي الله عنه के मोमिनों के मामूँ केहने की शरई हैषियत

मुरत्तिब
खुसरो कासिम

रस्मुल खत हिन्दी
डॉ. शहेजाद हुसैन काजी

नाशिर : ईमाम जा'फर सादिक फाउन्डेशन (अहले सुन्नत)

अमीर मुआविया رضي الله عنه को मोमिनों के मामूँ कहने की शरई हैषियत

मुरत्तिब
ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी
डॉ. शहेज़ादहुसैन काज़ी

:: मिलने का पता ::

ईमाम जा'फ़र सादिक़ फ़ाउन्डेशन (अहले सुन्नत)

मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पेश लफ्ज

हमारे दीनी लिटरेचर में बाज़ हज़रात अमीर मुआविया رضي الله عنه को मोमिनो के मामूँ लिख रहे हैं और ये षाबित करना चाहते हैं के अमीर मुआविया رضي الله عنه की बहन सय्यिदा उम्मे हबीबा رضي الله عنها नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم की ज़ौजियत में थी, और अज़वाजे मुतहहरात को कुरआनमें मोमिनो की माँए कहा गया है तो अमीर मुआविया رضي الله عنه अहले ईमान के मामूँ करार पाएंगे ।

ये एक नई बिदअत है जो बाज़ लोगो ने ईजाद की हैं । अहदे रिसालत, अहदे सहाबा और अहदे ताबईन में हमें कोई एसी रिवायत नही मिलती के अमीर मुआविया رضي الله عنه को मोमिनो का मामूँ कहा गया हो अगर उम्महातुल मो'मिनीन की वजह से उनके भाई मोमिनो के मामूँ होंगे तो ये इम्तियाज सिर्फ अमीर मुआविया رضي الله عنه को क्यूँ है, इस ज़ैल में सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه भी आएंगे जो उम्मुल मो'मिनीन हफसा बिनते उमर رضي الله عنها के भाई है, अब्दुरहमान बिन अबूबक्र رضي الله عنه भी आएंगे जो सय्यिदा आईशा رضي الله عنها के भाई है और फिर रिश्तेदारियो का यह सिलसिला दराज़ होता है तो अज़वाजे मुतहहरात की बहनें मोमिनो की ख़ाला करार पाएंगी और उनसे निकाह हराम होगा, इसी तरह उनकी बेटियाँ मोमिनो की बहनें कहलाएंगी जिनसे निकाह हराम होगा । मुख्तसर ये की अमीर मुआविया رضي الله عنه से गुलू की हद तक महब्बत करने वालोने ये बिदअत ईजाद की है और उसे बगैर किसी दलील के उम्मत के अंदर फैलाया है । ज़ेरे मुतालआ किताब्यामें मैंने मो'तबर उलमाए इस्लाम की तेहरीरे स्केन कर के सामने रखी है और उनके मुकाबले उनका सलीस उर्दू तर्जुमा भी पेश कर दिया है । इससे मा'लूम होगा के अमीर मुआविया رضي الله عنه को मोमिनो का मामूँ कहना जायज़ नही है और येह एक बिदअत है जो बाज़ लोग फैला रहे है ।

अल्लाह ﷻ से दुआ है के वह हमें हक़ बात कहने और हक़ पर अमल करने की तौफीक अता फरमाए । उम्मीद हैं के इस मुख्तसर दस्तावेज़ी तेहरीर से एक मरवियत गलत-फहमी का इज़ला हो जाएगा ।

ख़ुसरो कासिम

नाम : अमीर मुआविया رضي الله عنه के मोमिनों के मामूँ कहने की शरई हैषियत
मुरत्तिम : ख़ुसरो कासिम
रस्मुलख़त हिन्दी : डॉ. शहेज़ादहुसैन काज़ी
सने इशाअत (हिन्दी) : 2020

:: मिलने का पता ::

ईमाम जा'फ़र सादिक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत)

मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)

फेहरिस्त

ध्यान रहे : यहां पर फेहरिस्त में उस किताब और उसके तालीफ (Author) का नाम दिया गया है जिस किताब का स्कैन पेज इस किताब में है ।

किताब व तालीफ का नाम (लेखक/Authorship) का नाम		पेज नं.
1.	अल-वसीत फी तफ़ीसुल कुरआनिल मजीद अबुल हसन अली बिन अहमद वाहिदी नेशाबुरी <small>رحمۃ اللہ علیہ</small>	1 - 2
2.	अल लुबाब फी उलूमिल किताब इमामे मुफ़रिसर अबू हफ़्स उमर बिन अली इब्ने आदिल दिमशकी हंबली <small>رحمۃ اللہ علیہ</small>	3 - 4
3.	तफ़सीरुल मज़हरी काज़ी मुहम्मद षनाउल्लाह उष्मानी हनफ़ी मज़हरी नक्शबंदी <small>رحمۃ اللہ علیہ</small>	5 - 6
4.	रौदचुतालिबीन इमाम अबु ज़करिया यहा बिन शरफ़ नववी दिमशकी	7 - 8
5.	अल-मुन्तका मिन मिन्हाजुल इ'तिदाल फी नक्दी कलामि अह्लुरफ़ज वल इ'तिज़ाल तकीउद्दीन अहमद बिन तैमिया	9 - 10
6.	अल-तफ़सीरुल मुनीर फ़ील-अक्दीदह वल-शरीअह वल-मन्हज डॉक्टर वहब् जुहैली	11 - 12

किताब व तालीफ़ का नाम (लेखक/Authorship) का नाम		पेज नं.
7.	इम्ताउल अरमा बिमा लिन्नबिय्यी ﷺ मिन्नल अह्वालि वल अम्वालि वल हफ़दति वल मता' तक़उद्दीन अहमद बिन अली बिन अब्दुलकादिर मुहम्मद मक़रीज़ी رحمه الله	13 - 14
8.	अल-उम्म इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़िई رحمه الله	15-16
9.	सिफ़तुरसफ़वह इमाम जमालुद्दीन अबुल फ़रज इब्नुल जौज़ी	17-18

الوسيط
في تفسير القرآن المجيد

تحقيق وتعليق
 الشيخ عادل أحمد عبد الرزاق
 الدكتور أحمد محمد حنيفة
 الشيخ علي محمد معوض
 الدكتور أحمد عبد الغني المجلد
 الدكتور عبد الرحمن عويس

المحضر الثالث

دارالكتب العلمية
بيروت - لبنان

وَلَوْ أَخَذْنَا مِنَ الَّذِينَ مِثْقَلُ ذَرَّةٍ مِنْكَ وَنَحْنُ نُدْرِكُ الْيَوْمَ أَهْلَهُمْ وَمَوْتَهُمْ وَيَسَىٰ أُنْثَىٰ مِنْهُمُ أَخَذْنَا مِنْهُمْ كَيْفًا ۖ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿١٠٠﴾

(١) - الأم للإمام الشافعي ١٢٦/٥ باختلاف رسم

(٧) - الزبير بن العوام بن خويلد الأسدي ولد سنة ٢٨ قبل الهجرة وت سنة ٣٦ هـ

(٣) - أسماء بنت أبي بكر الصديق عبد الله بن عثمان النخعية ذات الظالمين ماتت بعد والدتها بقليل الإصابة ٢٢٩/٤.

(٤) - الأم للشامي ١٢٦/٥

(٦٥) - ساقط من هـ

अबुल हसन अली बिन अहमद वाहिदी नेशाबुरी رحمۃ اللہ علیہ (मुतवफ़ा 468 हि.) अपनी तफ़सीर “अल-वसीत फ़ी तफ़िसरुल कुरआनिल मजीद” में लिखते हैं :

सख़िदा अ़ाइशा رضی اللہ عنہا से एक ख़ातुन ने कहा: “ए अम्मी जान !” येह सुन कर सख़िदा अ़ाइशा رضی اللہ عنہا ने फ़रमाया: “मैं तुम्हारी माँ नहीं हूँ बल्के सिर्फ़ तुम्हारे मर्दों की माँ हूँ।” इससे मा’लूम हुआ के इस उमूमत का मफ़हूम सिर्फ़ येह है के उनसे निकाह करना हराम है। इस बुनियाद पर अज़वाजे मुतह़रात की बेटियों को मोमिनो की बहन कहना जाइज़ नहीं है और न उनके भाइयों और बहनों को ओहले ईमान के मामूँ और ख़ाला कहना जायज़ है।

इसी वजह से इमाम शाफ़िई رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं: “सख़िदिना जुबैर رضی اللہ عنہ ने सख़िदा अस्मा बिनते अबूबक्र رضی اللہ عنہ से निकाह किया बावजूद इसके के वह उम्मुल मो’मिनीन सख़िदा अ़ाइशा رضی اللہ عنہا की बहन थी। उनको किसी ने नहीं कहा के वोह मोमिनो की ख़ाला है।”

الكتاب في علوم الكتاب

تأليف

الإمام المفسر أبي حفص عمر بن الخطاب
ابن عادل الدمشقي الحنبلي
المتوفى بعد سنة ٨٨٠ هـ

تحقيق وتعليق

الشيخ عادل أحمد عبد الموجود
الشيخ علي محمد معوض

شاركت في تحقيقه برعاية الكاميّة

الدكتور محمد عبد الرحمن / الدكتور محمد التوفيقي الدوسي حربي

الجزء الخامس عشر

الكتاب

أول سورة الشعراء - آخر سورة الأحزاب

مستودع

دار الكتب العلمية
بيروت - لبنان

سورة الأحزاب / الآيات: ٦-٨

بمَنَّهُمْ أُولَئِكَ يَتَعَصَى اللَّهُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُوا أَمْرَهُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ شَرِّهِمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانُ الْعَظِيمَ ﴿٦﴾ وَكَانَ قَوْلُ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ فِي الْكِتَابِ مَن تَزَوَّجَ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ فَمَا يَزْنِ أُولَئِكَ بِمَا عَزَّ وَجَلَّ وَلَئِنْ كُنْتُمْ لَا تَفْعَلُوا فَلَا تَدْرِي لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْفَاحِشِينَ ﴿٧﴾ وَلَئِنْ كُنْتُمْ لَا تَفْعَلُوا فَلَا تَدْرِي لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْفَاحِشِينَ ﴿٨﴾

قوله: «التي أُولَى بالمؤمنين من أنفسهم» أي من بعضهم ببعض في نفوذ حكمه ووجوب طاعته عليهم وقال ابن عباس (وقادة) (١) وعطاء يعني إذا دعاهم النبي - ﷺ - ودعاهم أنفسهم إلى شيء كانت طاعة النبي - ﷺ - أُولَى بهم من طاعة أنفسهم. وقال ابن زيد: النبي (٢) أُولَى بالمؤمنين من أنفسهم فيما قضى بينهم كما كنت (٣) أُولَى بعبدك فيما قضيت عليه، وقيل: أُولَى بهم في الحمل على الجهاد وبذل النفس (٤) دونه، وقيل: كان النبي - ﷺ - يخرج إلى الجهاد فيقول قوم: نذهب فقتلناؤن (٥) من آبائنا وأمهاتنا. فنزلت (٦) (٧) (٨)، وروى أبو هريرة أن النبي - ﷺ - قال: «ما من مؤمن إلا أنا أُولَى به في الدنيا والآخرة المزمع أن يفتن: النبي أُولَى بالمؤمنين من أنفسهم» فأبنا مؤمن مات وترك مالا فليزفه غيبته من كانوا ومن ترك ذلها أو ضياعا فليأني فأنا مؤلاؤه (٩). قوله: «وأزواجه أمهاتهم» أي مثل أمهاتهم وهو أب لهم ومن أمهات المؤمنين في تعظيم حقهن وتحريم تكاحهن على التأييد لا في النظر إليهن، والخلو بهن فإنه حرام في حقهن كما في حق الأجانب قال الله تعالى: ﴿وَلَا تَتَزَوَّجُوا مَا تَحْتَ أَيْمَانِكُمْ فَإِنْ كُنْتُمْ لَا تَفْعَلُوا فَلَا تَدْرِي لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْفَاحِشِينَ﴾ (١٠) (١١) (١٢) (١٣) (١٤) (١٥) (١٦) (١٧) (١٨) (١٩) (٢٠) (٢١) (٢٢) (٢٣) (٢٤) (٢٥) (٢٦) (٢٧) (٢٨) (٢٩) (٣٠) (٣١) (٣٢) (٣٣) (٣٤) (٣٥) (٣٦) (٣٧) (٣٨) (٣٩) (٤٠) (٤١) (٤٢) (٤٣) (٤٤) (٤٥) (٤٦) (٤٧) (٤٨) (٤٩) (٥٠) (٥١) (٥٢) (٥٣) (٥٤) (٥٥) (٥٦) (٥٧) (٥٨) (٥٩) (٦٠) (٦١) (٦٢) (٦٣) (٦٤) (٦٥) (٦٦) (٦٧) (٦٨) (٦٩) (٧٠) (٧١) (٧٢) (٧٣) (٧٤) (٧٥) (٧٦) (٧٧) (٧٨) (٧٩) (٨٠) (٨١) (٨٢) (٨٣) (٨٤) (٨٥) (٨٦) (٨٧) (٨٨) (٨٩) (٩٠) (٩١) (٩٢) (٩٣) (٩٤) (٩٥) (٩٦) (٩٧) (٩٨) (٩٩) (١٠٠) (١٠١) (١٠٢) (١٠٣) (١٠٤) (١٠٥) (١٠٦) (١٠٧) (١٠٨) (١٠٩) (١١٠) (١١١) (١١٢) (١١٣) (١١٤) (١١٥) (١١٦) (١١٧) (١١٨) (١١٩) (١٢٠) (١٢١) (١٢٢) (١٢٣) (١٢٤) (١٢٥) (١٢٦) (١٢٧) (١٢٨) (١٢٩) (١٣٠) (١٣١) (١٣٢) (١٣٣) (١٣٤) (١٣٥) (١٣٦) (١٣٧) (١٣٨) (١٣٩) (١٤٠) (١٤١) (١٤٢) (١٤٣) (١٤٤) (١٤٥) (١٤٦) (١٤٧) (١٤٨) (١٤٩) (١٥٠) (١٥١) (١٥٢) (١٥٣) (١٥٤) (١٥٥) (١٥٦) (١٥٧) (١٥٨) (١٥٩) (١٦٠) (١٦١) (١٦٢) (١٦٣) (١٦٤) (١٦٥) (١٦٦) (١٦٧) (١٦٨) (١٦٩) (١٧٠) (١٧١) (١٧٢) (١٧٣) (١٧٤) (١٧٥) (١٧٦) (١٧٧) (١٧٨) (١٧٩) (١٨٠) (١٨١) (١٨٢) (١٨٣) (١٨٤) (١٨٥) (١٨٦) (١٨٧) (١٨٨) (١٨٩) (١٩٠) (١٩١) (١٩٢) (١٩٣) (١٩٤) (١٩٥) (١٩٦) (١٩٧) (١٩٨) (١٩٩) (٢٠٠) (٢٠١) (٢٠٢) (٢٠٣) (٢٠٤) (٢٠٥) (٢٠٦) (٢٠٧) (٢٠٨) (٢٠٩) (٢١٠) (٢١١) (٢١٢) (٢١٣) (٢١٤) (٢١٥) (٢١٦) (٢١٧) (٢١٨) (٢١٩) (٢٢٠) (٢٢١) (٢٢٢) (٢٢٣) (٢٢٤) (٢٢٥) (٢٢٦) (٢٢٧) (٢٢٨) (٢٢٩) (٢٣٠) (٢٣١) (٢٣٢) (٢٣٣) (٢٣٤) (٢٣٥) (٢٣٦) (٢٣٧) (٢٣٨) (٢٣٩) (٢٤٠) (٢٤١) (٢٤٢) (٢٤٣) (٢٤٤) (٢٤٥) (٢٤٦) (٢٤٧) (٢٤٨) (٢٤٩) (٢٥٠) (٢٥١) (٢٥٢) (٢٥٣) (٢٥٤) (٢٥٥) (٢٥٦) (٢٥٧) (٢٥٨) (٢٥٩) (٢٦٠) (٢٦١) (٢٦٢) (٢٦٣) (٢٦٤) (٢٦٥) (٢٦٦) (٢٦٧) (٢٦٨) (٢٦٩) (٢٧٠) (٢٧١) (٢٧٢) (٢٧٣) (٢٧٤) (٢٧٥) (٢٧٦) (٢٧٧) (٢٧٨) (٢٧٩) (٢٨٠) (٢٨١) (٢٨٢) (٢٨٣) (٢٨٤) (٢٨٥) (٢٨٦) (٢٨٧) (٢٨٨) (٢٨٩) (٢٩٠) (٢٩١) (٢٩٢) (٢٩٣) (٢٩٤) (٢٩٥) (٢٩٦) (٢٩٧) (٢٩٨) (٢٩٩) (٣٠٠) (٣٠١) (٣٠٢) (٣٠٣) (٣٠٤) (٣٠٥) (٣٠٦) (٣٠٧) (٣٠٨) (٣٠٩) (٣١٠) (٣١١) (٣١٢) (٣١٣) (٣١٤) (٣١٥) (٣١٦) (٣١٧) (٣١٨) (٣١٩) (٣٢٠) (٣٢١) (٣٢٢) (٣٢٣) (٣٢٤) (٣٢٥) (٣٢٦) (٣٢٧) (٣٢٨) (٣٢٩) (٣٣٠) (٣٣١) (٣٣٢) (٣٣٣) (٣٣٤) (٣٣٥) (٣٣٦) (٣٣٧) (٣٣٨) (٣٣٩) (٣٤٠) (٣٤١) (٣٤٢) (٣٤٣) (٣٤٤) (٣٤٥) (٣٤٦) (٣٤٧) (٣٤٨) (٣٤٩) (٣٥٠) (٣٥١) (٣٥٢) (٣٥٣) (٣٥٤) (٣٥٥) (٣٥٦) (٣٥٧) (٣٥٨) (٣٥٩) (٣٦٠) (٣٦١) (٣٦٢) (٣٦٣) (٣٦٤) (٣٦٥) (٣٦٦) (٣٦٧) (٣٦٨) (٣٦٩) (٣٧٠) (٣٧١) (٣٧٢) (٣٧٣) (٣٧٤) (٣٧٥) (٣٧٦) (٣٧٧) (٣٧٨) (٣٧٩) (٣٨٠) (٣٨١) (٣٨٢) (٣٨٣) (٣٨٤) (٣٨٥) (٣٨٦) (٣٨٧) (٣٨٨) (٣٨٩) (٣٩٠) (٣٩١) (٣٩٢) (٣٩٣) (٣٩٤) (٣٩٥) (٣٩٦) (٣٩٧) (٣٩٨) (٣٩٩) (٤٠٠) (٤٠١) (٤٠٢) (٤٠٣) (٤٠٤) (٤٠٥) (٤٠٦) (٤٠٧) (٤٠٨) (٤٠٩) (٤١٠) (٤١١) (٤١٢) (٤١٣) (٤١٤) (٤١٥) (٤١٦) (٤١٧) (٤١٨) (٤١٩) (٤٢٠) (٤٢١) (٤٢٢) (٤٢٣) (٤٢٤) (٤٢٥) (٤٢٦) (٤٢٧) (٤٢٨) (٤٢٩) (٤٣٠) (٤٣١) (٤٣٢) (٤٣٣) (٤٣٤) (٤٣٥) (٤٣٦) (٤٣٧) (٤٣٨) (٤٣٩) (٤٤٠) (٤٤١) (٤٤٢) (٤٤٣) (٤٤٤) (٤٤٥) (٤٤٦) (٤٤٧) (٤٤٨) (٤٤٩) (٤٥٠) (٤٥١) (٤٥٢) (٤٥٣) (٤٥٤) (٤٥٥) (٤٥٦) (٤٥٧) (٤٥٨) (٤٥٩) (٤٦٠) (٤٦١) (٤٦٢) (٤٦٣) (٤٦٤) (٤٦٥) (٤٦٦) (٤٦٧) (٤٦٨) (٤٦٩) (٤٧٠) (٤٧١) (٤٧٢) (٤٧٣) (٤٧٤) (٤٧٥) (٤٧٦) (٤٧٧) (٤٧٨) (٤٧٩) (٤٨٠) (٤٨١) (٤٨٢) (٤٨٣) (٤٨٤) (٤٨٥) (٤٨٦) (٤٨٧) (٤٨٨) (٤٨٩) (٤٩٠) (٤٩١) (٤٩٢) (٤٩٣) (٤٩٤) (٤٩٥) (٤٩٦) (٤٩٧) (٤٩٨) (٤٩٩) (٥٠٠) (٥٠١) (٥٠٢) (٥٠٣) (٥٠٤) (٥٠٥) (٥٠٦) (٥٠٧) (٥٠٨) (٥٠٩) (٥١٠) (٥١١) (٥١٢) (٥١٣) (٥١٤) (٥١٥) (٥١٦) (٥١٧) (٥١٨) (٥١٩) (٥٢٠) (٥٢١) (٥٢٢) (٥٢٣) (٥٢٤) (٥٢٥) (٥٢٦) (٥٢٧) (٥٢٨) (٥٢٩) (٥٣٠) (٥٣١) (٥٣٢) (٥٣٣) (٥٣٤) (٥٣٥) (٥٣٦) (٥٣٧) (٥٣٨) (٥٣٩) (٥٤٠) (٥٤١) (٥٤٢) (٥٤٣) (٥٤٤) (٥٤٥) (٥٤٦) (٥٤٧) (٥٤٨) (٥٤٩) (٥٥٠) (٥٥١) (٥٥٢) (٥٥٣) (٥٥٤) (٥٥٥) (٥٥٦) (٥٥٧) (٥٥٨) (٥٥٩) (٥٦٠) (٥٦١) (٥٦٢) (٥٦٣) (٥٦٤) (٥٦٥) (٥٦٦) (٥٦٧) (٥٦٨) (٥٦٩) (٥٧٠) (٥٧١) (٥٧٢) (٥٧٣) (٥٧٤) (٥٧٥) (٥٧٦) (٥٧٧) (٥٧٨) (٥٧٩) (٥٨٠) (٥٨١) (٥٨٢) (٥٨٣) (٥٨٤) (٥٨٥) (٥٨٦) (٥٨٧) (٥٨٨) (٥٨٩) (٥٩٠) (٥٩١) (٥٩٢) (٥٩٣) (٥٩٤) (٥٩٥) (٥٩٦) (٥٩٧) (٥٩٨) (٥٩٩) (٦٠٠) (٦٠١) (٦٠٢) (٦٠٣) (٦٠٤) (٦٠٥) (٦٠٦) (٦٠٧) (٦٠٨) (٦٠٩) (٦١٠) (٦١١) (٦١٢) (٦١٣) (٦١٤) (٦١٥) (٦١٦) (٦١٧) (٦١٨) (٦١٩) (٦٢٠) (٦٢١) (٦٢٢) (٦٢٣) (٦٢٤) (٦٢٥) (٦٢٦) (٦٢٧) (٦٢٨) (٦٢٩) (٦٣٠) (٦٣١) (٦٣٢) (٦٣٣) (٦٣٤) (٦٣٥) (٦٣٦) (٦٣٧) (٦٣٨) (٦٣٩) (٦٤٠) (٦٤١) (٦٤٢) (٦٤٣) (٦٤٤) (٦٤٥) (٦٤٦) (٦٤٧) (٦٤٨) (٦٤٩) (٦٥٠) (٦٥١) (٦٥٢) (٦٥٣) (٦٥٤) (٦٥٥) (٦٥٦) (٦٥٧) (٦٥٨) (٦٥٩) (٦٦٠) (٦٦١) (٦٦٢) (٦٦٣) (٦٦٤) (٦٦٥) (٦٦٦) (٦٦٧) (٦٦٨) (٦٦٩) (٦٧٠) (٦٧١) (٦٧٢) (٦٧٣) (٦٧٤) (٦٧٥) (٦٧٦) (٦٧٧) (٦٧٨) (٦٧٩) (٦٨٠) (٦٨١) (٦٨٢) (٦٨٣) (٦٨٤) (٦٨٥) (٦٨٦) (٦٨٧) (٦٨٨) (٦٨٩) (٦٩٠) (٦٩١) (٦٩٢) (٦٩٣) (٦٩٤) (٦٩٥) (٦٩٦) (٦٩٧) (٦٩٨) (٦٩٩) (٧٠٠) (٧٠١) (٧٠٢) (٧٠٣) (٧٠٤) (٧٠٥) (٧٠٦) (٧٠٧) (٧٠٨) (٧٠٩) (٧١٠) (٧١١) (٧١٢) (٧١٣) (٧١٤) (٧١٥) (٧١٦) (٧١٧) (٧١٨) (٧١٩) (٧٢٠) (٧٢١) (٧٢٢) (٧٢٣) (٧٢٤) (٧٢٥) (٧٢٦) (٧٢٧) (٧٢٨) (٧٢٩) (٧٣٠) (٧٣١) (٧٣٢) (٧٣٣) (٧٣٤) (٧٣٥) (٧٣٦) (٧٣٧) (٧٣٨) (٧٣٩) (٧٤٠) (٧٤١) (٧٤٢) (٧٤٣) (٧٤٤) (٧٤٥) (٧٤٦) (٧٤٧) (٧٤٨) (٧٤٩) (٧٥٠) (٧٥١) (٧٥٢) (٧٥٣) (٧٥٤) (٧٥٥) (٧٥٦) (٧٥٧) (٧٥٨) (٧٥٩) (٧٦٠) (٧٦١) (٧٦٢) (٧٦٣) (٧٦٤) (٧٦٥) (٧٦٦) (٧٦٧) (٧٦٨) (٧٦٩) (٧٧٠) (٧٧١) (٧٧٢) (٧٧٣) (٧٧٤) (٧٧٥) (٧٧٦) (٧٧٧) (٧٧٨) (٧٧٩) (٧٨٠) (٧٨١) (٧٨٢) (٧٨٣) (٧٨٤) (٧٨٥) (٧٨٦) (٧٨٧) (٧٨٨) (٧٨٩) (٧٩٠) (٧٩١) (٧٩٢) (٧٩٣) (٧٩٤) (٧٩٥) (٧٩٦) (٧٩٧) (٧٩٨) (٧٩٩) (٨٠٠) (٨٠١) (٨٠٢) (٨٠٣) (٨٠٤) (٨٠٥) (٨٠٦) (٨٠٧) (٨٠٨) (٨٠٩) (٨١٠) (٨١١) (٨١٢) (٨١٣) (٨١٤) (٨١٥) (٨١٦) (٨١٧) (٨١٨) (٨١٩) (٨٢٠) (٨٢١) (٨٢٢) (٨٢٣) (٨٢٤) (٨٢٥) (٨٢٦) (٨٢٧) (٨٢٨) (٨٢٩) (٨٣٠) (٨٣١) (٨٣٢) (٨٣٣) (٨٣٤) (٨٣٥) (٨٣٦) (٨٣٧) (٨٣٨) (٨٣٩) (٨٤٠) (٨٤١) (٨٤٢) (٨٤٣) (٨٤٤) (٨٤٥) (٨٤٦) (٨٤٧) (٨٤٨) (٨٤٩) (٨٥٠) (٨٥١) (٨٥٢) (٨٥٣) (٨٥٤) (٨٥٥) (٨٥٦) (٨٥٧) (٨٥٨) (٨٥٩) (٨٦٠) (٨٦١) (٨٦٢) (٨٦٣) (٨٦٤) (٨٦٥) (٨٦٦) (٨٦٧) (٨٦٨) (٨٦٩) (٨٧٠) (٨٧١) (٨٧٢) (٨٧٣) (٨٧٤) (٨٧٥) (٨٧٦) (٨٧٧) (٨٧٨) (٨٧٩) (٨٨٠) (٨٨١) (٨٨٢) (٨٨٣) (٨٨٤) (٨٨٥) (٨٨٦) (٨٨٧) (٨٨٨) (٨٨٩) (٨٩٠) (٨٩١) (٨٩٢) (٨٩٣) (٨٩٤) (٨٩٥) (٨٩٦) (٨٩٧) (٨٩٨) (٨٩٩) (٩٠٠) (٩٠١) (٩٠٢) (٩٠٣) (٩٠٤) (٩٠٥) (٩٠٦) (٩٠٧) (٩٠٨) (٩٠٩) (٩١٠) (٩١١) (٩١٢) (٩١٣) (٩١٤) (٩١٥) (٩١٦) (٩١٧) (٩١٨) (٩١٩) (٩٢٠) (٩٢١) (٩٢٢) (٩٢٣) (٩٢٤) (٩٢٥) (٩٢٦) (٩٢٧) (٩٢٨) (٩٢٩) (٩٣٠) (٩٣١) (٩٣٢) (٩٣٣) (٩٣٤) (٩٣٥) (٩٣٦) (٩٣٧) (٩٣٨) (٩٣٩) (٩٤٠) (٩٤١) (٩٤٢) (٩٤٣) (٩٤٤) (٩٤٥) (٩٤٦) (٩٤٧) (٩٤٨) (٩٤٩) (٩٥٠) (٩٥١) (٩٥٢) (٩٥٣) (٩٥٤) (٩٥٥) (٩٥٦) (٩٥٧) (٩٥٨) (٩٥٩) (٩٦٠) (٩٦١) (٩٦٢) (٩٦٣) (٩٦٤) (٩٦٥) (٩٦٦) (٩٦٧) (٩٦٨) (٩٦٩) (٩٧٠) (٩٧١) (٩٧٢) (٩٧٣) (٩٧٤) (٩٧٥) (٩٧٦) (٩٧٧) (٩٧٨) (٩٧٩) (٩٨٠) (٩٨١) (٩٨٢) (٩٨٣) (٩٨٤) (٩٨٥) (٩٨٦) (٩٨٧) (٩٨٨) (٩٨٩) (٩٩٠) (٩٩١) (٩٩٢) (٩٩٣) (٩٩٤) (٩٩٥) (٩٩٦) (٩٩٧) (٩٩٨) (٩٩٩) (١٠٠٠) (١٠٠١) (١٠٠٢) (١٠٠٣) (١٠٠٤) (١٠٠٥) (١٠٠٦) (١٠٠٧) (١٠٠٨) (١٠٠٩) (١٠١٠) (١٠١١) (١٠١٢) (١٠١٣) (١٠١٤) (١٠١٥) (١٠١٦) (١٠١٧) (١٠١٨) (١٠١٩) (١٠٢٠) (١٠٢١) (١٠٢٢) (١٠٢٣) (١٠٢٤) (١٠٢٥) (١٠٢٦) (١٠٢٧) (١٠٢٨) (١٠٢٩) (١٠٣٠) (١٠٣١) (١٠٣٢) (١٠٣٣) (١٠٣٤) (١٠٣٥) (١٠٣٦) (١٠٣٧) (١٠٣٨) (١٠٣٩) (١٠٤٠) (١٠٤١) (١٠٤٢) (١٠٤٣) (١٠٤٤) (١٠٤٥) (١٠٤٦) (١٠٤٧) (١٠٤٨) (١٠٤٩) (١٠٥٠) (١٠٥١) (١٠٥٢) (١٠٥٣) (١٠٥٤) (١٠٥٥) (١٠٥٦) (١٠٥٧) (١٠٥٨) (١٠٥٩) (١٠٦٠) (١٠٦١) (١٠٦٢) (١٠٦٣) (١٠٦٤) (١٠٦٥) (١٠٦٦) (١٠٦٧) (١٠٦٨) (١٠٦٩) (١٠٧٠) (١٠٧١) (١٠٧٢) (١٠٧٣) (١٠٧٤) (١٠٧٥) (١٠٧٦) (١٠٧٧) (١٠٧٨) (١٠٧٩) (١٠٨٠) (١٠٨١) (١٠٨٢) (١٠٨٣) (١٠٨٤) (١٠٨٥) (١٠٨٦) (١٠٨٧) (١٠٨٨) (١٠٨٩) (١٠٩٠) (١٠٩١) (١٠٩٢) (١٠٩٣) (١٠٩٤) (١٠٩٥) (١٠٩٦) (١٠٩٧) (١٠٩٨) (١٠٩٩) (١١٠٠) (١١٠١) (١١٠٢) (١١٠٣) (١١٠٤) (١١٠٥) (١١٠٦) (١١٠٧) (١١٠٨) (١١٠٩) (١١١٠) (١١١١) (١١١٢) (١١١٣) (١١١٤) (١١١٥) (١١١٦) (١١١٧) (١١١٨) (١١١٩) (١١٢٠) (١١٢١) (١١٢٢) (١١٢٣) (١١٢٤) (١١٢٥) (١١٢٦) (١١٢٧) (١١٢٨) (١١٢٩) (١١٣٠) (١١٣١) (١١٣٢) (١١٣٣) (١١٣٤) (١١٣٥) (١١٣٦) (١١٣٧) (١١٣٨) (١١٣٩) (١١٤٠) (١١٤١) (١١٤٢) (١١٤٣) (١١٤٤) (١١٤٥) (١١٤٦) (١١٤٧) (١١٤٨) (١١٤٩) (١١٥٠) (١١٥١) (١١٥٢) (١١٥٣) (١١٥٤) (١١٥٥) (١١٥٦) (١١٥٧) (١١٥٨) (١١٥٩) (١١٦٠) (١١٦١) (١١٦٢) (١١٦٣) (١١٦٤) (١١٦٥) (١١٦٦) (١١٦٧) (١١٦٨) (١١٦٩) (١١٧٠) (١١٧١) (١١٧٢) (١١٧٣) (١١٧٤) (١١٧٥) (١١٧٦) (١١٧٧) (١١٧٨) (١١٧٩) (١١٨٠) (١١٨١) (١١٨٢) (١١٨٣) (١١٨٤) (١١٨٥) (١١٨٦) (١١٨٧) (١١٨٨) (١١٨٩) (١١٩٠) (١١٩١) (١١٩٢) (١١٩٣) (١١٩٤) (١١٩٥) (١١٩٦) (١١٩٧) (١١٩٨) (١١٩٩) (١٢٠٠) (١٢٠١) (١٢٠٢) (١٢٠٣) (١٢٠٤) (١٢٠٥) (١٢٠٦) (١٢٠٧) (١٢٠٨) (١٢٠٩) (١٢١٠) (١٢١١) (١٢١٢) (١٢١٣) (١٢١٤) (١٢١٥) (١٢١٦) (١٢١٧) (١٢١٨) (١٢١٩) (١٢٢٠) (١٢٢١) (١٢٢٢) (١٢٢٣) (١٢٢٤) (١٢٢٥) (١٢٢٦) (١٢٢٧) (١٢٢٨) (١٢٢٩) (١٢٣٠) (١٢٣١) (١٢٣٢) (١٢٣٣) (١٢٣٤) (١٢٣٥) (١٢٣٦) (١٢٣٧) (١٢٣٨) (١٢٣٩) (١٢٤٠) (١٢٤١) (١٢٤٢) (١٢٤٣) (١٢٤٤) (١٢٤٥) (١٢٤٦) (١٢٤٧) (١٢٤٨) (١٢٤٩) (١٢٥٠) (١٢٥١) (١٢٥٢) (١٢٥٣) (١٢٥٤) (١٢٥٥) (١٢٥٦) (١٢٥٧) (١٢٥٨) (١٢٥٩) (١٢٦٠) (١٢٦١) (١٢٦٢) (١٢٦٣) (١٢٦٤) (١٢٦٥) (١٢٦٦) (١٢٦٧) (١٢٦٨) (١٢٦٩) (١٢٧٠) (١٢٧١) (١٢٧٢) (١٢٧٣) (١٢٧٤) (١٢٧٥) (١٢٧٦) (١٢٧٧) (١٢٧٨) (١٢٧٩) (١٢٨٠) (١٢٨١) (١٢٨٢) (١٢٨٣) (١٢٨٤) (١٢٨٥) (١٢٨٦) (١٢٨٧) (١٢٨٨) (١٢٨٩) (١٢٩٠) (١٢٩١) (١٢٩٢) (١٢٩٣) (١٢٩٤) (١٢٩٥) (١٢٩٦) (١٢٩٧) (١٢٩٨) (١٢٩٩) (١٣٠٠) (١٣٠١) (١٣٠٢) (١٣٠٣) (١٣٠٤) (١٣٠٥) (١٣٠٦) (١٣٠٧) (١٣٠٨) (١٣٠٩) (١٣١٠) (١٣١١) (١٣١٢) (١٣١٣) (١٣١٤) (١٣١٥) (١٣١٦) (١٣١٧) (١٣١٨) (١٣١٩) (١٣٢٠) (١٣٢١) (١٣٢٢) (١٣٢٣) (١٣٢٤) (١٣٢٥) (١٣٢٦) (١٣٢٧) (١٣٢٨) (١٣٢٩) (١٣٣٠) (١٣٣١) (١٣٣٢) (١٣٣٣) (١

इमामे मुफ़सिर अबू हफ़स उमर बिन अली इब्ने आदिल दिमशकी हंबली رحمته الله (मतवफ़ा: 880 हि.) अपनी किताब “अल लुबाब फी उलूमिल किताब” में लिखते हैं:

अज़वाजे मुतहहरात की बेटियों को येह नहीं कहा जा सकता के वोह मोमिनो की बहनें हैं और न उनके भाईयो और बहनों को अेहले ईमान के मामूँ और ख़ाला कहना जाइज़ है ।

इमाम शाफ़िई رحمته الله फ़रमाते हैं: सय्यिदना जुबैर رضي الله عنه का निकाह अस्मा رضي الله عنها बित्ते अबुबक्र رضي الله عنه से हुआ था जबके वह उम्मुल मो’मिनीन आइशा رضي الله عنها की बहन थी ।

अेहले इल्म के इस बाबत इख़्तिलाफ़ है के क्या अज़वाजे मुतहहरात मोमिना औरतो की माँ है । इस सिलसिले में कहा गया है के वह सिर्फ़ मोमिनो की माँएं है औरतो की माँएं नहीं है ।

تفسير المظهري

تأليف
القاضي محمد شمس الدين العثماني الحنفى المظهرى
النقشبندى
١١٤٣ - ١١٢٥

تحقيقه
أحمد سريوسنى

الجزء السابع

دار الحديث
بدمشق

بتعليم الله تعالى ولا يأمرهم ولا يرضى منهم إلا ما فيه صلاحهم ونجاحهم قال الله تعالى: ﴿وَتَرْبِطُ مَتْنُكُمْ وَالْمُؤْمِنِينَ تَرْبِطُكُمْ﴾^(١) بخلاف أنفسهم فإنها أمانة بالسوء إلا من رحم الله وهي ظلم جهول فيجب عليهم أن يكون الله أحب إليهم من أنفسهم فأمره أنقل عليهم من أمرها وشفقته أوفر من شفقتها عليها، قال رسول الله ﷺ: «لا يؤمن أحدكم حتى أكون أحب إليه من والده وولده والناس أجمعين»^(٢) متفق عليه من حديث أنس، وعن أبي هريرة أن رسول الله ﷺ قال: «ما من مؤمن إلا وأنا أولى به في الدنيا والآخرة إقرأوا إن شئتم» (النبي أولى بالمؤمنين من أنفسهم) فأبما مؤمن مات وترك مالا فليبره عصبته من كانوا ومن ترك ديناً أو ضياعاً فليأتني فأنأ مولاه»^(٣) روى البخاري وأزواجه أمهاتهم تعظيم حقهن وتحريم نكاحهن على التأيد لا في النظر إليهن والخلوة بهن فإنه حرام في حقهن كما في حق الأجنيات قال الله تعالى: ﴿وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاهُنَّ سَأَلْنَهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ﴾^(٤) ولا يقال لبناتهن أخوات المؤمنين ولا لإخوتهن وأخواتهن أخوات المؤمنين وخالاتهم، قال الشافعي تزوج الزبير أسماء بنت أبي بكر وهي أخت أم المؤمنين عائشة ولم يقل هي خالة المؤمنين، قلت وزوج رسول الله ﷺ بنته بعلبي وعثمان، قال البيهقي روى الشعبي عن مسروق أن امرأة قالت لعائشة يا أمة فقلت لست لك بأم إنما أنا أم رجالكم، وكذا أخرج البيهقي في سننه فبأن بهذا أنه تعالى أراد تحريم النكاح وفي قراءة أبي بن كعب وأزواجه أمهاتهم وهو أب لهم يعني في الدين فإن كل نبي أب لأمة من حيث أنه أصل فيما بها لحياة الأبدية ولذلك صار المؤمنون إخوة ﴿وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بِمَعْنَاهُمْ أُولَى بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ﴾ أي في حكم الله أو في اللوح المحفوظ أو في القرآن وهو هذه الآية أو آية الموارث يعني في التوارث ولذلك قال رسول الله ﷺ: «أبما مؤمن مات وترك مالا فليبره عصبته من كانوا» ﴿يَنْزِلُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ﴾ صلة لأولي ومن تفصيلية والآية ناسخة لما كان في ابتداء الإسلام التوارث بالهجرة والموالات في الدين، قال البيهقي قال فتادة كان السلمون يتوارثون بالهجرة، وقال الكلبي أخاً رسول الله ﷺ بين الناس وكان يؤاخي بين رجلين فلما مات أحدهما ورث الآخر عصباً

- (١) سورة التوبة، الآية: ١٢٨.
- (٢) أخرجه البخاري في كتاب: الإيمان، باب: حب الرسول ﷺ من الإيمان (١٥)، وأخرجه مسلم في كتاب: الإيمان، باب: وجوب محبة رسول الله ﷺ أكثر من الأهل والولد والوالد (٤٤).
- (٣) أخرجه البخاري في كتاب: الاستغناء، باب: الصلاة على من ترك ديناً (٢٩٩).
- (٤) سورة الأحزاب، الآية: ٥٣.

काज़ी मुहम्मद षनाउल्लाह उष्मानी हनफ़ी मज़हरी नक्शबंदी رحمۃ اللہ علیہ (मुतवफ़्फ़ा: 1225 हि.) अपनी तफ़सीर “तफ़सीरुल मज़हरी” में लिखते हैं: इमाम शाफ़िई رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं: सय्यिदना जुबैर رضی اللہ عنہ ने असमा رضی اللہ عنہا बिनते अबूबक्र رضی اللہ عنہ से शादी की जो उम्मुल मो’मिनीन हज़रत अ़इशा رضی اللہ عنہا की बहन थी लेकिन किसी ने ये नहीं कहा के वोह मोमिनो की ख़ाला है। मैं कहता हूँ: खुद रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने अपनी बेटियों का निकाह सय्यिदिना अ़ली رضی اللہ عنہ व सय्यिदना उषमान رضی اللہ عنہ से किया। इमाम बग़वी رحمۃ اللہ علیہ कहते हैं के इमाम शा’बी मसरुक़ से रिवायत करते हैं के एक ख़ातून ने सय्यिदा अ़इशा رضی اللہ عنہا को “ए अम्मी” कह दिया तो उन्हों ने फ़रमाया: “मैं तुम्हारी माँ नहीं बल्के तुम्हारे मर्दो की माँ हूँ।”

رَوَضَةُ الطَّالِبِينَ

لِلإمام أبي زكريا يحيى بن شرف النويري الدمشقي

المتوفى سنة ٦٧١
ومعه

المساجد الشريفة في ترجمة الإمام النويري

منسقة في ينبوع

فيما زاد على الرخصة من الضرورة

لحافظ جلال الدين الشيرازي

تحقيق

إشيخ عادل أحمد عبدالمجيد شيخ علم محمد معروض

المجلد الخامس

دار عالم الكتب
للطباعة والنشر والتوزيع

ولو فرض أن بعض المخبرات اختارت الفراق ، ففي حلها لغيره طريقان . قال المراقبون : فيها الأوجه ، وقطع أبو يعقوب الأبيودي وأخرون بالحل ، لتحصل فائدة التخيير ، وهو التمكن من زينة الدنيا ، وهذا اختيار الامام ، والغزالي .

ومنه ، أن أزواجه أمهات المؤمنين ، سواء من ماتت تحته ﷺ ، ومن مات عنها وهي تحته ، وذلك في تحريم نكاحهن ووجوب احترامهن وطاعتهم ، لا في النظر والخلو ، ولا يقال : بناتهن أخوات المؤمنين ، ولا أباؤهن وأمهاتهن أجداد وجدات المؤمنين ، ولا إخوتهم وأخواتهم أخوال المؤمنين وخالاتهم . وحكى أبو الفرج الزاز وجهاً أنه يطلق اسم الاخوة على بناتهن ، واسم الخؤولة على إخوتهم وأخواتهن ، لثبوت حرمة الأمومة لهن ، وهذا ظاهر لفظ المختصر .

قلت : قال البيهقي : كن أمهات المؤمنين من الرجال دون النساء ، روي ذلك عن عائشة رضي الله عنها^(١) ، وهذا جارٍ على الصحيح عند أصحابنا وغيرهم من أهل الأصول ، أن النساء لا يدخلن في خطاب الرجال . وحكى الماوردي في تفسيره خلافاً في كونهن أمهات المؤمنات ، وهو خارج على مذهب من أدخلهن في خطاب الرجال . قال البيهقي : كان النبي ﷺ أباً للرجال والنساء جميعاً . وقال الواحدي من أصحابنا : قال بعض أصحابنا : لا يجوز أن يقال : هو أبو المؤمنين ، لقول الله تعالى : ﴿ ما كان محمد أباً أحد من رجالكم ﴾^(٢) .

قال : نص الشافعي على أنه يجوز أن يقال : هو أبو المؤمنين ، أي : في الحرمة . ومعنى الآية : ليس أحد من رجالكم ولد صلبه . والله أعلم .

ومنه ، تفضيل زوجاته على سائر النساء^(٣) ، وجعل ثوابهن وعقابهن مضاعفاً ،

- الزوجة والامة وصرح به صاحب التلمذة والبارزي .

(١) والخلاف في جمع المذكر السالم هل يتناول الإناث . اتفق الأصوليون على أن الصيغة الخاصة بكل من التوأمين لا يدخل فيها النوع الآخر ، فالرجال لا يشمل النساء والنساء لا يشمل الرجال كما اتفقوا على أن الجمع الذي لم يظهر فيه علامة التذكير والتأنيث يعم التوأمين مثل الناس واختلفوا في الجمع الذي يمتنع بعلامة التذكير وهو المعروف بجميع المذكر السالم ، فالشافعية والحنفية ذهبوا إلى أنه خاص بالذكر ، وقال الحنابلة وبعض الظاهرية أنه يتناول الإناث كالذكور .

(٢) سورة الأحزاب الآية (١٠) .

(٣) قال في الخدم هل المراد نساء أهل هذه الأمة أو نساء كلهن . فيه خلاف حكاه الروياني في البير .

इमाम अबु ज़करिया यहा बिन शरफ़ नववी दिमशकी (मुतवफ़ा: 676 हि.) अपनी किताब “रौदचुतालिबीन” में लिखते हैं: “यह नहीं कहा जाएगा के अज़वाजे मुतहहरात की बेटियां मोमिनो की बहनें हैं और न उनके बाप और मोमिनो के नाना-नानी हैं और न अज़वाजे मुतहहरात के भाई-बहन ओहले ईमान के मामूँ और खालाएँ हैं।”



المبهمات

من

منهاج الاعتدال

في نقض كلام أهل الرفض والاعتزال

وهو

مختصر منهاج السنة

تأليف: شيخ الإسلام في القرنين الرابع والخامس

رحمته الله تعالى

٦٦١ - ٧٢٨ هـ

اختصره: الحافظ أبو عبد الله محمد بن عيسى بن عمار الدينوري

٦٧٣ - ٧٤٨ هـ

محققه وعلى مرآته

محب الدين الخطيب

طبع على نفقة بعض المسانيد

تحت إشراف

الرئاسة العامة لإدارات البحوث العلمية والإفتاء والدعوة والإرشاد

وكالة الطباعة والترجمة

الرياض - المملكة العربية السعودية

وقف لله تعالى

١٤١٣ هـ

سوى الراضية ، وما ينكر هذا إلا من يقول الحسين ليس بابن فاطمة ، كما قال بعض النصيرية : وما كان الحسن والحسين أولاد علي ، بل أولاد سليمان الفارسي ، ومنهم من قال : ليس أبو بكر وعمر مدفونين عند النبي ﷺ ، وإن رقية وأم كلثوم لبنتا بنبي النبي ﷺ (١) بل بنتا خديجة من غيره .

قال (٢) : « ولم يسموا أخاها محمد بن أبي بكر خال المؤمنين ، وسموا معاوية خال المؤمنين » .

قلنا : هذا إنما بقوله جهلة السنة نكاهة فيكم ، وإلا فلا فرق ، وقد تنازع العلماء في إخوانهم هل يقال لأحدهم « خال المؤمنين » ؟ فجوز ذلك بعضهم (٣) ، ولو جوزنا ذلك لانتسب الخرق وأكثر أخوال المؤمنين وخالاتهم ولقبيل في أبي بكر وعمر : جد المؤمنين وحرم التزوج بخالات المؤمنين ، وهذا لا يقوله بشر ، وذلك أنه لم يثبت لأزواجه ﷺ أحكام النسب ، وإنما ثبت لمن الحرة والاسم (٤) وتحريم نكاحهن دون المحرمة ، وإنما قال هذا بعض السنة في معاوية خاصة لما رأوا من استحلال الراضية لعنه وتكفيره ، فهلاً ذكرت من هو أفضل من معاوية ومحمد [بن أبي بكر] وهو عبد الله بن عمر ؟ وكان سبب اختصاص محمد [بن أبي بكر] بعلي لأنه ربيبه وابن زوجته ، فإن علياً تزوج

(١) وآخر من رأيناه من الشيعة ينكر على رسول الله ﷺ أن رقية وأم كلثوم بنتاه عبد الله محمد مهدي الكاظمي القزويني في ٢ : ٢٩١ من منهاجه . بل ينكر أن يكون لها فضل تستحقان به الشرف والتقدم . (٢) أي الراضية المردود عليه .

(٣) ليكبوا جناح منكري الفضل لأهلنا ، ولما كان هذا الإنكار من الشيعة في حق معاوية رضي الله عنه قد تجاوزوا به إلى حد الإسراف ، وكان له رد الفضل بتخصيص معاوية فيها رواه القاضي أبو بكر بن العربي (٤٦٨ - ٥٤٣) أنه شاهد بنفسه على أبواب مساجد بغداد دار السلام مدة الخلافة العباسية في النصف الثاني من القرن الخامس والنصف الأول من القرن السادس : « غير الناس بعد رسول الله ﷺ أبو بكر ، ثم عمر ، ثم عثمان ، ثم علي ، ثم معاوية خال المؤمنين رضي الله عنهم » قال ابن العربي : هذا وبين بني أمية وبني العباس مالا يخفى على الناس (انظر متن المواضع من الفواصم ٢١٣) .

(٤) أي اسم « أمهات المؤمنين » .

तक़ीउद्दीन अहमद बिन तैमिय्या (मुतवफ़ा: 727 हि.) की किताब “मिन्हाजुरसुन्ना” की तल्ख़ीस “अल-मुन्तक़ा मिन् मिन्हाजुल इ’तिदाल फ़ी नक़दी कलामि अह्लुर्रफ़ज़ वल इ’तिज़ाल” में हाफ़िज़ अबु अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उषमान ज़हबी رحمته الله (मुतवफ़ा: 748 हि.) लिखते हैं:

उलमाए इस्लाम का इस बाबत इख़्तिलाफ़ है के क्या अज़वाजे मुतहहरात के भाइयों में से किसी को मामूँ कहना जाइज़ है या नहीं ? बाज़ हज़रात ने उसे जायज़ करार दिया है । लेकिन अगर हम इसके जवाज़ का रास्ता खोल दें तो दाएरा बड़ा वसी’अ हो जाएगा । और मोमिनो के मामूँ बहावर ख़ालाएँ तसी हो जाएंगी और फिर सय्यदिना अबूबक्र और सय्यदिना उमर رضي الله عنهما के बारे में यह कहना जायज़ हो जाएगा के वह मोमिनो के नाना है और फिर मोमिनो की इन ख़ालाओं से उनका निकाह नाजाइज़ करार पाएगा और शायद रुए-जमीन का कोई इन्सान एसी बात नहीं कहेगा ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا نَدَاءَ اللَّهِ وَلَازِمُوا رَسُولَ اللَّهِ إِذَا دُعِيَ لَكُمْ بِهِ

النفسية المؤمنة

في العقيدة والشرعية والمنهج

الأستاذ الدكتور وهب الزحيلي

المجلد الحادي عشر
الجزءان ٢١ - ٢٢



٢٧٢

الجزء ٢١ - ٢٢ / ٢٣ - ٢٤

في صدر الإسلام، منها: أنه ﷺ كان لا يُصلي على ميت عليه ذن، فلما فتح الله عليه الفتح قال كما جاء في الصحيحين: «أنا أولى بالمؤمنين من أنفسهم، لمن توفي وعليه دين فعلي فضاؤه، ومن ترك مالا فلورثته». وفي الصحيحين أيضاً: «فإنكم ترك ديناً أو ضياعاً فأنا مولاه» والضياع: مصدر ضاع، ثم جعل اسماً لكل ما يتعرض للضياع من عيال وينين لا كالمثل لهم، ومال لا قيم له. وسببت الأرض ضيعة لأنها معرضة للضياع، ولجميع ضياعاً.

قال بعض العلماء: يجب على الإمام أن يقضي من بيت المال دين الفقراء اقتداء بالنبي ﷺ فإنه قد صرح بوجوب ذلك عليه، حيث قال: «فعلني قضاء».

٣ - جعلت أزواج النبي ﷺ أمهات المؤمنين في وجوب التعظيم والبر والإجلال، وحرمة النكاح على الرجال، ومحرم النظر إليهن، وحجبهن عن الرجال، بخلاف الأمهات. وهذه الأمومة لا توجب ميراثاً كامومة النبي، وجرار تزويج بناتهن، ولا يجعلن أخوات للناس، ولا أخوات أخوال المؤمنين وخالاتهم، فقد تزوج الزبير أسماء بنت أبي بكر الصديق، وهي أخت عائشة، ولم يقل: هي خالة المؤمنين. ولا يقال لماوية وأمثلة خال المؤمنين.

ومن في قول أمهات الرجال خاصة، لا أمهات الرجال والنساء، من عائشة رضي الله عنها أن امرأة قالت لها: يا أمه! فقالت لها: لست لك بأم، إنما أنا أم رجالكم. قال ابن العربي: وهو الصحيح^(١).

وقال القرطبي: لا فائدة في اختصاص الحصر في الإباحة للرجال دون النساء، والذي يظهر لي أنهن أمهات الرجال والنساء، تعظيماً لحقهن على الرجال والنساء. يدل عليه صدر الآية: «الَّتِي أُولَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَمْسِهِمْ»

(١) أحكام القرآن: ١٢٩٧/٣

डॉक्टर वहब्ब जुहैली (मुतवफ़ा: 1436 हि.) अपनी तफ़सीर “अल-तफ़सीरुल मुनीर फ़ील-अक़ीदह वल-शरीअह वल-मन्हज” में लिखते हैं:

नबिय्ये करीम ﷺ की अज़वाजे मुतह़रात को मोमिनो की माँएं कहा गया है। इससे मालूम होता है के उनकी ता'ज़ीम, उनके साथे हुस्ने सुलूक और उनकी तकरीम वाजिब है। मर्दों के लिए उनसे निकाह करना हराम है। उनकी तरफ़ नज़र उठा कर देखना हराम है और सगी माँओं के बर-अक्स मर्दों से उनका पर्दा करना वाजिब है।

यह एसी उमूमत है जिसमें बेटियों की माँओं की तरह विसा वाजिब नहीं है। उनकी बेटियों से निकाह करना जाइज़ है, उनकी बेटियाँ आम लोगों की बहनें नहीं हैं और न उनके भाई-बहन मोमिनो के मामूँ और उनकी ख़ालाएँ हैं।

यही तो वजह है के सय्यिदना जुबैर رضي الله عنه ने असमा बन्ते अबूबक्र رضي الله عنه से निकाह किया था जबके वोह सय्यिदा आइशा رضي الله عنها की बहन थी। उनके बारे में यह नहीं कहा जा सकता के वह मोमिनो की ख़ाला है और न अमीर मुआविया رضي الله عنه और उन जैसे दूसरे हज़रात को मोमिनो का मामूँ कहा जा सकता है।

एक क़ौल के मुताबिक़ वह सिर्फ़ मर्दों की माँएं है, न के मर्दों और औरतों दोनो की माँएं है। सय्यिदा आइशा رضي الله عنها को एक ख़ातून ने मुख़ातिब करते हुए माँ कह दिया तो उन्होंने कहा: मैं तुम्हारी माँ नहीं बल्के हम अज़वाजे मुतह़रात तुम्हारे मर्दों की माँएं है।

इब्नुल अरबी رحمته الله कहते हैं: यह क़ौल दुरुस्त है।

إِشْتِاعُ الْأَسْمَاءِ

بِالْإِسْمِ بِاللهِ مِنَ الْأَحْوَالِ وَالْأَمْوَالِ
وَالْخُفَةِ وَالْمَتَاعِ

تأليف

تقي الدين أحمد بن عبد القادر بن محمد القرني
المتوفى سنة ٨٤٥ هـ

تحقيق وتعليق

محمد عبد الحميد النعيمي

المجلد العاشر

مشتريات

مركز أبي بفيش
دار الكتب العلمية

ببروت - بيروت

فخرج هي ^(١) لم حية بنت أبي سفيان ، فاستوت لم المؤمنين ووصلت مملوكة
خل المؤمنين ^(٢) .

قال البيهقي : كما في رواية قتبي وأصب خلواتا في أن هذا حكم لا
يخفى أو أراج الله ^(٣) فمن أمهات المؤمنين في التحريم ولا يندى هذا التحريم
إلى المؤمنين ، ولا إلى المؤمنين ، ولا إلى بلقيس ، وطلع قوم من جوف تسعة
مملوكة خل المؤمنين بل هذا لم يطلع لم يطلع عليه إلا قتبي في رواية
حتى أنهم زعموا أنه دعي بانه في عهد النبي ^(٤) وطلوا في الإكراه حتى استبدوا
بمن قال من قول رسول الله ^(٥) وليس لكك أسل ، ولا عرف بطلان ذلك في
جسر السدلية ، والفتن ، قد قل مسد بين أبي بكر ولم يفتح أسماء مملوكة
إلا ذلك بأنه قل خل المؤمنين ، وقد عده الله بن أبي بكر مملوكة حتى سويده
مملوكة ولم [يكثر] بأنه من خل المؤمنين ، ولا دعا به أحد من المسلمين ،
ولم يدع عده الله بن عمر بخل المؤمنين ، ولا قل لم يندى الرحمن بن أبي بكر
خل المؤمنين ، ولا يكره عليه أهل العلم في أن منزلة عاتكة وحفصة وحسبي
الله فترك وتعالى عليهما من رسول الله ^(٦) كانت أصغر من منزلة أم حبيبة بنت
أبي سفيان وحسبي الله فترك وتعالى عنه ومع ذلك لم يدع أحد من المؤمنين بخل
المؤمنين ، فبطل بطلان على مملوكة بن أبي سفيان وحسبي الله فترك وتعالى
عنه خل المؤمنين ؟ ومنزلة وعزلة أبيه من رسول الله ^(٧) دون منزلة عده
الله بن عمر ومكة عده الله بن الحارث واليودع وسالمة مملوكة ، وهذه عائشة
وحسبي الله فترك وتعالى عنها ثلث لها فتركها له : فت ذلك ولم ،
لما قال لم رجلكم فحسنا بانه مملوكة الأئمة تحريم للمؤمنين وكذا لم يخل أن

(١) قال السلكي : لا يخل بخلان لثروت المؤمنين . ولا لغير المؤمنين لثروتهم ولا
لغيرهم ولا لغيرهم لثروتهم ولا لغيرهم لثروتهم . من أمهات المؤمنين دون هذه ، وروى
ذلك عن عائشة وحسبي الله فترك وتعالى عنها ، وطلوا بها في عهد النبي ^(٢) أمهات
هذه ، وهو جار على الصحيح حد أسديا وفهر من قبل الشرح : أن هذا لا يخل
في خطاب الرجال . (فخر بن عبد الله) : ٧٦ ، ٧٧ ، أصل في ذكر أولادهم وسرويه
شكرت .

لأحد قل لأسماء بنت أبي بكر وحسبي الله فترك وتعالى عنها خل المؤمنين ،
قد قل قولني في تفسير قوله تعالى : (وَكَوَلَّيْنَاهُمَا) أي في حرمه
تلكمين وهذه الأئمة تعود إلى حرمه فكان لا خير ، ألا ترى أنه لا يخل
روزيين ، ولا يزيد المؤمنين ، ولا يؤمنهم ، ولعل كالأهيات في الفتنة ،
والديوث ، ولي (فتكت) الحارثي : يعني من سكت عنها رسول الله ^(٣)
أولاده من كالأهيات في البيت .
لحدهما : تكلم حنين .

والفتي : تحريم لتكلمين ، ولما كالأهيات في الفتنة والديوث وهل
من أمهات المؤمنين من فرج دون النساء ؟ صموا لفتح ، وهو قول عائشة .
وخرج البيهقي من طريق أبي عروة ، عن فراس ، عن أنس ، عن
سروق عن عائشة وحسبي الله فترك وتعالى عنها أن امرأة لفت لها ما له
الفت : فت الله ولم إنما قال لم فرجكم وهذا جار على الصحيح عند أسديا
وغيرهم ، وهذا يفرق أن الجمع لشكر السلام حل بخل فيه فساء ^(٤) وحسبي
مسكه منفردة في الأصول .

لكن وقع في (رسالة) للإمام قتبي في ترجمة ما نزل من القرآن
عام الظاهر قوله تعالى : (كتب عليهم الصيام) ^(٥) وقوله : (إن الصلاة كانت
على المؤمنين كتابا موقوتا) ^(٦) أي قل رحمه الله في لغير الكلام وكذا
الفتي في الصوم والصلاة على المؤمنين المسلمين خمس من لم يبلغ ومن بلغ ،
ولم يخل ، وخمس الحين في أيام جيشين لهذا يقتضي لغيره فخلن ، ولا لم
يخرج من لم يصوم وجب الاختصاص أن الفتنة لغيرتهن في حق الرجال
منفردة في حق النساء .

(١) أخرجه امرأة دوح ورواه كذا بلفظ عتي : (وفيه أصلا وهو صحيح)
والفتن : جمع مكر عام [التحريم : ١٠] وأخرجت مريم بنت عمران عليها السلام قوله
تعالى : (ولعل من الفتن) ر (الفتن : ١١) جمع مكر عام . (التحريم : ١١) .

(٢) الفهر : ١٨٣ .
(٣) هذا : ١٠٢ .

तक़उद्दीन अहमद बिन अली बिन अब्दुलकादिर मुहम्मद मक़रीज़ी رحمۃ اللہ علیہ (मुतवफ़ा: 495 हि.) अपनी किताब “इम्ताउल अरमा बिमा लिन्नबिय्या رحمۃ اللہ علیہ मिनल अह्वालि वल अम्वालि वल हफ़दति वल मता” में लिखते हैं:

इमाम बैहकी رحمۃ اللہ علیہ कहते हैं के कलबी की रिवायत में इसी तरह है के जबके हमारे उलमा का ख़याल है के येह हुक्म अज़वाजे मुतहहरात से आगे नहीं आएगा। हुस्मत में सिर्फ़ वही मोमिनो की माँएं हैं और न यह हुस्मत उनकी बहनों और भाइयों पर लागू होगी और न उनकी बेटियों पर पड़ेगा। इसी लिए एक जमा'त ने इस बात से मना किया है के अमीर मुआविया رضی اللہ عنہ को मोमिनो का मामूँ कहा जाए, यह एक नौ ईजाद मुआमला है। अमीर मुआविया رضی اللہ عنہ को उन लोगो ने मामूँ कहा है जो उनकी महब्बत में गुलू करते थे। उन्होने यहां तक दावा कर डाला है के अमीर मुआविया رضی اللہ عنہ को अह्दे रिसालत में मोमिनो का मामूँ कहा जाता था। झूट की इन्तिहा उस वक़्त हो गई जब उन्होने उसे नबी صلی اللہ علیہ وسلم का कौल बना डाला। जबके उसकी कोई अस्ल नहीं है। अह्दे सहाबा और अह्दे ताबईन में सेका कोई चलन नहीं था। मुहम्मद बिन अबूबक्र رضی اللہ عنہ को क़त्ल कर दिया गया लेकिन मुआविया رضی اللہ عنہ के दुश्मनो ने यह कह कर उनकी मज़म्मत नहीं की के उन्होने मोमिनो के मामूँ को क़त्ल किया है। **अब्दुल्लाह बिन जुबैर رضی اللہ عنہ को मक्का में यज़ीद बिन मुआविया की फ़ौज़ ने फाँसी दे दी लेकिन यह मातम नहीं हुआ कि मोमिनो की ख़ाला के बेटे को क़त्ल कर दिया गया।** किसी सहाबी ने भी इस तरह की कोई बात नहीं कही। अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ को मोमिनो का मामूँ नहीं कहा गया। अब्दुरहमान बिन अबूबक्र رضی اللہ عنہ को अह्ले ईमान का मामूँ नहीं कहा गया। आम अह्ले इल्म को इसमें कोई शक़ नहीं है के सय्यिदा अ़इशा رضی اللہ عنہ और सय्यिदा हफ़सा رضی اللہ عنہ रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की नज़र में उम्मे हबीबा رضی اللہ عنہ बित्ते अबी सुफ़ियान से ज़्यादा मुक़ाम रखती थी। इसके बावजूद इन दोनों के भाइयों को मोमिनो का मामूँ नहीं कहा गया। फिर अमीर मुआविया رضی اللہ عنہ बिन अबू सुफ़ियान को मोमिनो का मामूँ क्यों कर कहा जा सकता है। अमीर मुआविया رضی اللہ عنہ और उनके वालिद का मुक़ाम रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की नज़र में अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ से फ़रो-तर है। इल्म, तक्वा और मुसाबक़त फ़िल-इस्लाम में उनका अपना मुक़ाम है। यह सय्यिदा अ़इशा رضی اللہ عنہ है, उनको जब एक ख़ातून ने ‘ए अम्मी!’ कहा दिया तो उन्होने फ़रमाया : मैं तुम्हारी माँ नहीं बल्के मैं तुम्हारे मर्दों की माँ हूँ। इससे हमें मालूम हुआ के यहाँ उम्मत का मफ़हूम सिर्फ़ यह है के उनसे निकाह करना हराम है, उसी तरह यह कहीं मज़कूर नहीं है के किसी ने असमा बित्ते अबूबक्र رضی اللہ عنہ को किसी ने मोमिनो की ख़ाला कहा हो।

الأحكام

للإمام محمد بن إدريس الشافعي

١٥٠ - ٢٠٤ هـ

تمت

الكتبة رفعت فوزي عبد المطلب

المجلد السادس

النكاح .. الرضا .. الضمان .. الشفاعة
عشرة النساء .. الفرية بين الأبناء .. الطلاق
القلم والتشريع .. العدد .. الظاهر والإبصار .. اللعان

كتاب ما يحل وما يحرم من النكاح / باب نكاح حرار أهل الكتاب ١٩

مدلن مسلمين ، ويؤكد من أهل دينها كولي المسلمة ، جاز في دينهم (١) غير ذلك أو لم يجر ، ولست أنظر فيه إلا إلى حكم الإسلام . ولو زوجت نكاحاً صحيحاً في الإسلام وهو عندكم نكاح (٢) فاسد / كان نكاحها صحيحاً ، ولا يرد نكاح المسلمة من (٣) شيء إلا رد نكاح الكتابية من مثله (٤) ، ولا يجوز نكاح المسلمة بشيء إلا جاز نكاح الكتابية بمثله ، ولا يكون وكى اللمة مسلماً وإن كان أباهما ، لأن الله تبارك وتعالى قطع الولاية بين المسلمين والمشركين .

[٢١٩٥] وتزوج رسول الله ﷺ أم حبيبة بنت أبي سفيان ووكى حفدة (٥) نكاحها ابن سعيد بن العاصي (٦) وكان مسلماً وأبو سفيان حي ، فدل ذلك على (٧) أن لا ولاية بين أهل القرابة إذا اختلف الدين وإن كان أباً ، وأن الولاية بالقرابة واجتماع الدين .

قال : ويقسم للكتابية مثل قسمته للمسلمة لا اختلاف بينهما ، ولها عليه ما للمسلمة ، وله عليها ما له على المسلمة ، إلا أنهما لا يتوارثان باختلاف الدين . فإن طلقها ، أو

- (١) في (ج) : في أهل دينهم ، وما قبلته من (ب ، ص ، م) .
- (٢) في (م) : نكاحاً صحيحاً وهو نكاح ، وما قبلته من (ب ، ج ، ص) .
- (٣) من : سائلة من (م) ، وكتبتا من (ب ، ج ، ص) .
- (٤) في (م) : إلا جاز نكاح الكتابية بطل ، وما قبلته من (ب ، ج ، ص) .
- (٥) في (ج) : حفدة ، وما قبلته من (ب ، ص ، م) .
- (٦) في (ب) : العاصي .
- (٧) على : سائلة من (م) ، وكتبتا من (ب ، ج ، ص) .

[٢١٩٥] • هناك اختلاف لمن زوج رسول الله ﷺ أم حبيبة فدل على فساد من طريق عبد الرزاق ، عن معمر ، عن الزهري ، عن حمزة بن الزبير ، عن أم حبيبة : أنه زوجها النبي ﷺ رسول الله ﷺ . وعند البيهقي في باب تسمية أزواج النبي ﷺ من كتاب النكاح من السنن الكبرى (٧ / ٧١) : نكح رسول الله ﷺ أم حبيبة عثمان بن عفان رضي الله عنه ، وكذلك في باب لا يكون الكفار ولها مسلمة ٧ / ١٣٩ - ١٤٠ .

كما روى البيهقي من طريق ابن إسحاق قال : بلغني أن الذي ولي نكاح أم حبيبة ابن عباس عمار ابن سعيد بن العاصي . (السنن الكبرى ٧ / ١٣٩) .

وروى مسلم من طريق عكرمة بن عمار ، عن أبي ذر عن ابن عباس ما يفيد أن الذي زوجها لها هو أبوها أبو سفيان (م ١ / ١٩٤ - ١٩٥) كتب فضائل الصحابة - ١٠ : ب من فضائل أبي سفيان ابن حرب رضي الله عنه .

وعكرمة بن عمار - كما - يقول البيهقي - تركه البخاري لأنه لم يكن صاحب كتاب فاضطرب حديثه .

ولكنه يمكن القول : إن ذلك كان من أبي سفيان بعد إسلامه على سبيل حرد شرف تزويج الرسول ﷺ ، في تسهيل رسله - والله عز وجل وتعالى أعلم .

इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़िई رحمۃ اللہ علیہ (मुतवफ़ा: 204 हि.) अपनी किताब “अल-उम्म” में लिखते हैं:

रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने उम्मे हबीबा رضی اللہ عنہا बिनते अबू सुफ़ियान से निकाह किया और उस निकाह के वली इब्ने सईद बिन अल आसी थे। यह इब्ने सईद मुसलमान थे और उस वक्त अबू सुफ़ियान हयात थे। इससे मालूम हुआ के अगर मज़हब अलग अलग हो तो क़राबतदारों के दरमियान हक्के विलायत बाक़ी नहीं रहता है। बल्के क़राबतदारों के दरमियान विलायत का हक्क उसी वक्त होता है जब मज़हब एक हो।

ودين الحق ليظهره على الدين كله، ولو كره المشركون: أما بعد: أجيئ إلى ما دعا إليه رسول الله ﷺ وزوجه أم حبيبة بنت أبي سفيان، فبارك الله لرسول ﷺ.

ودفع الدناير إلى خالد بن سعيد العاص فقبضها، ثم أرادوا أن يقوموا فقال: اجلسوا فإن سنة الأنبياء إذا تزوجوا أن يؤكل طعاماً على التزويج. فدعا بطعام وأكلوا، ثم تفرقوا.

قالت أم حبيبة: فلما وصل إلي المال أرسلت إلى أبرة التي بشرتني فقلت لها: إني كنت أعطيتك ما أعطيتك يومئذ ولا مال بيدي، لهذه خمسون مثقالاً فخذها فاستعيني بها. فأبته وأخرجت خُفّاً فيه كل ما كنت أعطيتها لفرته علي وقالت: عزم علي الملك أن لا أرزأك شيئاً، وأنا التي أقوم على ثيابه ودهنه، وقد اتبعت دين محمد رسول الله ﷺ، وأسلمت لله عز وجل، وقد أمر الملك نساءه أن يمتحن إليك بكل ما عندهن من العطر.

قالت: فلما كان الغد جاتني بعمود ووذبي وعنبر وزباد كثير، ففدعت بذلك كله على رسول الله ﷺ فكان يراه علي وعندي فلا ينكره. ثم قالت أبرة: فهاجتي إليك أن تقرني على رسول الله ﷺ مني السلام، ومعلمي أنني قد اتبعت دينه. قالت: ثم لطفت بي، وكانت التي جُهرتني، وكانت كلما دخلت علي تقول: لا ننسُ حاجتي إليك.

قالت: فلما قدمت على رسول الله ﷺ أخبرته كيف كانت الخطبة؟ وما فعلت بي أبرة؟ فقبسم، وأقرأته منها السلام فقال: «وعليها السلام ورحمة الله وبركاته».

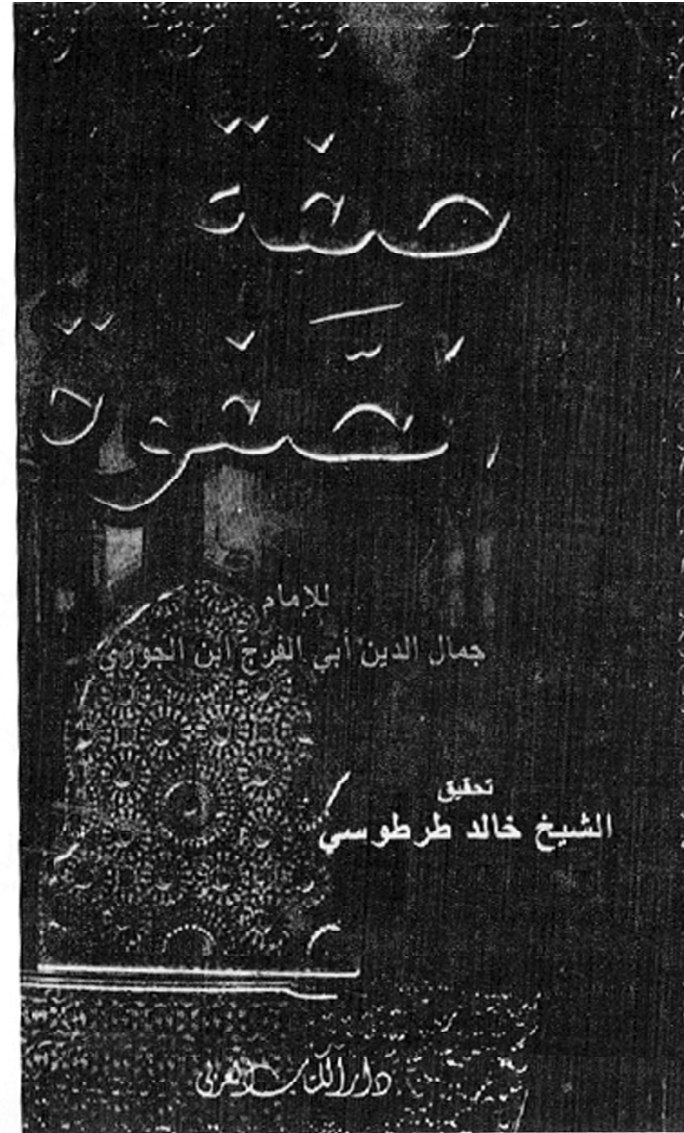
قال الزهري: لما قدم أبو سفيان بن حرب المدينة جاء إلى رسول الله ﷺ وهو يهرع غزوة مكة، فكلّمه: أن يزيد في عنة الحديبية. فلم يقبل عليه رسول الله ﷺ، فقام ودخل على ابنته أم حبيبة، فلما ذهب ليجلس على فراشي النبي ﷺ طوته دونه، فقال: يا بنية أرغيت بهذا الفراش حتى أم يري عنه؟ فقالت: بل هو فراش رسول الله ﷺ وأنت امرؤ نجس مشرك. فقال: يا بنية لقد أسألك بعمدي شئ.

قالت عائشة رضي الله عنها: دعني أم حبيبة عند موتها فقالت: قد كان يكون بيتنا ما يكون بين الضرائر، فغفر الله لي ولك ما كان من ذلك. فقلت: غفر الله لك ذلك كله، وتجاوز، وحلّك من ذلك كله. فقالت: سررتي سرّك الله. ولو سلت إلى أم سلمة فقالت لها مثل ذلك. وتوفيت سنة أربع وأربعين في خلافة معاوية.

١٣١ - زينب بنت جحش بن رثاب

أمها أميمة بنت عبد المطلب بن هاشم عمه رسول الله ﷺ، زوجها رسول الله ﷺ زيد بن حارثة، فلما طلقها زيد بن حارثة تزوجها رسول الله ﷺ في سنة خمس من الهجرة، وكانت من المهاجرات.

١٣١ - زينب بنت جحش - زوج المصطفى ﷺ - رضي الله عنها: الإصالة (١١٢٧)، الاستيعاب (٣٣٨٩)، أسد الغلبة (١٩٥٥)، طبقات ابن سعد (١٠١/٨)، المستدرک (٣٣/١)، مسند أحمد (٣٢٤/٦)، تاريخ الإسلام (٣١/٢)، تهذيب التهذيب (١٢٠/١٧)، شذرات الذهب (١٠/١)، مجمع الزوائد (٢٤٦/٩).



इमाम जमालुद्दीन अबुल फ़रज इब्नुल जौज़ी (मृतवर्षा: 597 हि.) अपनी किताब “सिफ़तुलरसफ़वह” में लिखते हैं:

इमाम जुहरी رحمته الله कहते हैं के जब अबू सुफ़ियान बिन हर्ब मदीना आए तो रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए, उस वक़्त आप फ़त्हे मक्का का इरादा कर रहे थे। अबू सुफ़ियानने आप ﷺ से बात की के सुलह हुदैबियह की मुद्दत में इज़ाफ़ा कर दें। यह बात सुन कर नबी ﷺ ने उनकी तरफ़ कोई तवज्जो नहीं दी। अबू सुफ़ियान वहाँ से उठ खड़े हुए और अपनी बेटी उम्मे हबीबा رضي الله عنها के पास आए। जब वोह रसूलुल्लाह ﷺ के बिस्तर पर बैठने चले तो उम्मे हबीबा رضي الله عنها ने बिस्तर लपेट दिया। अबू सुफ़ियान ने पूछा: ‘बेटी ! क्या यह बिस्तर मेरे क़ाबिल नहीं है या में इस बिस्तर के लाइक नहीं हूँ ?’ उम्मे हबीबा رضي الله عنها ने जवाब दिया: ‘येह बिस्तर रसूलुल्लाह ﷺ का है और आप एक नजिस और मुशिरक इन्सान है। यह जवाब सुन कर अबू सुफ़ियान ने कहा: बेटी ! मेरे बाद तुझे दुख ही दुख होगा।’



IMAM JAFAR SADIQ FOUNDATION

(Ahle Sunnat)

Founder & Chairman : Dr. Shahezaadhusain Yasinmiya Kazi

Mugalwada, Kasba, Modasa, Arvalli-383315 (Gujarat)